प्राक्कथन

भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'चित्रलेखा' हिन्दी जगत् का अत्यंत सुप्रसिध्द और बहुचर्चित रचना है। जिनमें पाप और पुण्य की समस्या को अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। मैं ने कॉलेज के दिनों में ही उसे एक ही बैठक में पढ डाला था। तदुपरान्त 'टेढे मेढे रास्ते', 'सामर्थ्य और सीमा', 'भूले बिसरे चित्र' आदि उपन्यास भी बढी चाव से पेढा था। तब से भगवतीबाबू के उपन्यासों पर कुछ सोचने-विचारने की इच्छा थी और जब एम.फिल्. उपाधि के लिए लघु-प्रबंध का विषय पूछा गया, तो मैं ने श्रध्देय प्राचार्य डॉ. बी.बो. पाटीलजी से अपनी इच्छा प्रकट की और उन्होंने मुझे इस विषय पर कार्य करने की अनुमति प्रदान की।

भगवतीबाबू यथार्थान्वेषी युग-साहित्यकार है। उनके उपन्यासों में युग जीवन की अनेक विध समस्याओं का विशद चित्रण मिलता है। यहाँ मेरा लक्ष्य केवल सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं के चित्रणपर ही रहा है। और इन्हें छ: विभागों में विभक्त कर प्रस्तुत किया है।

प्रथम अध्याय में भगवतीबाबू के जीवन वृत्तांत पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है और आर्थिक संघर्षों एवं पारिवारिक मुसीबतों से सामना करते हुए सृजनरत रहने की प्रवृत्ति का भी सामान्य परिचय दिया है। दुसरे अध्याय में उनके समय की युगीन परिस्थितियों का संक्षिप्त लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। तीसरे अध्याय में हिन्दी के समस्या-प्रधान उपन्यासों का उद्भव एवं विकास पर एक नजर डाली है, तो चौथे अध्याय में भगवतीबाबू का समस्या-प्रधान उपन्यासों में स्थान निर्धारण का प्रयास किया है। यहाँ हिन्दी के कुछ सुप्रसिध्द उपन्यासकारों से भगवतीबाबू की तुलना भी की है। पाँचवें अध्याय में भगवतीबाबू के उपन्यासों में चित्रित केवल, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत किया है और अन्तीम अध्याय उपसंहार के रूप में है, जिसमें समस्या प्रधान उपन्यासों में भगवतीबाबू के योगदान पर प्रकाश डाला है।

यह मेरा सौभाग्य है कि श्रध्देय प्राचार्य डॉ. बी.बी.पाटील जी के निर्देशन में यह लघु-प्रबन्ध पूरा करने का अवसर मिला । इन दिनों वे एक अलग ही प्रकार के आन्तरिक और बाह्य-संघर्ष से गुजर रहे थे, फिर भी उनका हृदय उदार और आत्मीय होने के कारण ही, अपना अमूल्य समय निकालकर मुझे दे दी, जिसके प्रतिफलस्वरुप यह कार्य मैं पूरा कर सका । उस अलोम कृपा को शब्दों में बाँधना मेरी शक्ति के बाहर है ।

इस कार्य को पूरा करने के लिए मुझे सांगोला कॉलेज के प्राचार्य य.ना. कदम जी का सक्रिय सहयोग और सहानुभूति प्राप्त हुई, जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन और सहयोग भी दिया । मैं उनके ऋण से मुक्त तो नहीं होना चाहता, परंतु उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ ।

इनके अतिरिक्त मेरे गुरुवर्य डॉ.गजानन मुर्वे जी (सातारा) ने मुझे समय समय पर अपने अमूल्य सुझावों से लाभान्वित किया । इसके साथ ही मेरे सहृदय प्रा. आय.एस.स्वामी जी (इंचलकरंजी), डॉ. के.आर. पाटील जी (गडहिंग्लज), प्रा. व्ही.व्ही. जाधव जी (सांगोला) तथा मेरे मित्र महावीर अंक्लकोपे जी ने समय समय पर मुझे सहायुयता और प्रोत्साहन देते रहें । इन सब का मैं हृदय से आभारी हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय का ग्रंथालय, महावीर कॉलेज, कोल्हापूर का ग्रंथालय, इंचलकरंजी कॉलेज का ग्रंथालय और सांगोला कॉलेज के ग्रंथालय से मुझे समय समय पर ग्रंथों को सहायुयता मिलती रही, इन सभी ग्रंथ लेखकों का मैं हृदय से आभारी हूँ ।

लघु-प्रबन्ध की टंकण त्रुटियों का यथासंभव निराकरण करने की कोशिश तो की गयी है, फिर भी कुछ त्रुटियाँ नजरन्दाजसे रह जाने की संभावना है । अत: मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूँ ।

अन्त में मैं उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में इस कार्य में प्रेरणा, प्रोत्साहन व सहाय्यता प्रदान की है, उन सब का मैं हृदय से आभारी हूँ।

[प्रा. जयकुमार ध. कुंदवाडे]

सांगोला।
दिनांक. १८ नवम्बर १९८८।